डॉ जीतेंद्र कुमार होता

सहायक प्राध्यापक (भूगोल)

भूगोल विभाग, दुर्गा महाविद्यालय रायपुर (छत्तीसगढ़)

छत्तीसगढ : बारनवापारा अभ्यारण्य

इस अभ्यारण्य का नामकरण अभ्यारण्य के बीच में स्थित बार एवं नवापारा दो गांव को मिला कर बारनावापारा रखा गया है। छत्तीसगढ़ का यह अभ्यारण्य पारिस्थितिकी पर्यटन के लिए जाना जाता है। छत्तीसगढ़ के अन्य अभ्यारण्य में से इसकी प्रसिद्धि भिन्न हैं। इसकी स्थापना बलौदाबाजार जिले के कसडोल तहसील, रायपुर वन मण्डल में सन् 28–जुलाई–1976 को वन्यप्राणी संरक्षण के लिए किया गया है। अभ्यारण्य को निम्नलिखित भौगोलिक कारक प्रभावित

स्थित–विस्तार :–

बारनवापारा अभ्यारण्य का विस्तार ($21^0$18′45′ से $21^0$30′ उत्तर अक्षांश तथा $82^0$22′30′ से $82^0$37′30′ पूर्व देशान्तर) 244 वर्ग कि.मी. क्षेत्र पर है (भारतीय सर्वेक्षण धरातल पत्रक क्र. 64–K)। यह अभ्यारण्य रायपुर से 100 कि.मी. दूर पर राष्ट्रीय राज्य मार्ग 6 (संशोधित 53) पर पटेवा से 17 कि.मी. दूर स्थित है। अभ्यारण्य से निकट रेल्वे स्टेशन महासमुन्द 55 कि.मी. एवं रायपुर 100 कि. मी. है। यहां बस एवं जीप के माध्यम से आसानी से पहुंचा जा सकता है।

धरातलीय स्वरूप :–

बारनवापारा अभ्यारण्य समुद्र सतह से 900 मीटर ऊंचे क्षेत्र पर स्थित है। पर्यटकों के लिए 1 नवम्बर से 30 जून का समय अनुकूल होता है। प्रति वर्ष यहां 5000 से अधिक पर्यटक भ्रमण के लिए आते हैं। अभ्यारण्य का दक्षिण–पूर्व भाग मैदानी है, जबकि इसका उत्तरी भाग पहाड़ियों से घिरा हुआ है। जिनके बीच की घाटियों में मैदान है। प्रबंधन की दृष्टि से इसे दो भाग में विभाजित किया गया है। मध्य भाग में लगभग 46 वर्ग कि.मी. के एक क्षेत्र में किसी भी तरह की मानव आबादी नही है।

जलवायु :–

अध्ययन क्षेत्र की जलवायु मानसूनी एवं उष्ण कटिबंधीय है। अभ्यारण्य में भ्रमण का अनुकूल समय ठण्ड एवं गर्मी का महीना होता है। यहां तापमान न्यूनतम 4^0 से. तथा अधिकतम 46^0 से. तक होता है। यहां सबसे अधिक ठण्ड दिसम्बर–जनवरी में तथा गर्मी अप्रेल से जून माह तक होती है। यहां वर्षा 120 से.मी. तक होती है।

अपवाह तंत्र :–

बारनवापारा अभ्यारण्य छत्तीसगढ़ की प्रमुख नदी महानदी के जलग्रहण क्षेत्र में स्थित है। महानदी की सहायक नदी बालमदेही अभ्यारण्य की पश्चिमी सीमा बनाती है, जबकि जोंक नदी इसकी उत्तर–पूर्व सीमा के पास से बहती है।

वनस्पति :–

बारनवापारा अभ्यारण्य सघन वन से आच्छादित है। यहां 21.5 प्रतिशत भाग पर सागौन वन है जिसका 0.5 प्रतिशत प्राकृतिक तथा 21 प्रतिशत रोपित है। साल वन का विस्तार 6 प्रतिशत भाग पर है, तथा शेष क्षेत्र में मिश्रित प्रजाति के वन है। यहां वृक्षों में प्रमुख रूप से सागौन, साजा, बीजा, हल्दू, धावड़ा, सरई, आंवला, चार, अमलतास, कर्रा इत्यादि है। वनों के बीच में पाए जाने वाले कुल्लम के सफेद तने वाले वृक्ष अत्यंत आकर्षक हैं। अभ्यारण्य में 18 प्रतिशत क्षेत्र में बांस के वन पाए जाते हैं, जो अन्य प्रजातियों के वनों के साथ आच्छादित है। इसके भू–आच्छादन में अनेक प्रजातियों की झाड़ियां तथा लताएं पाई जाती हैं। यहां अनेक औषधीय वनस्पति भी पाए जाते हैं।

वन्य प्राणी :–

बारनवापारा अभ्यारण्य को दो जोन में रखा गया है– कोर जोन तथा बफर जोन, जिसमें से बफर जोन में जीवों की अधिक संख्या एवं अनेक प्रजाति पाए जाते हैं। यहां बाघ, तेन्दुआ, गौर, भालू, सांभर, चीतल, नीलगाय, कोटरी, चौसिंघा, जंगलीसुअर, जंगली कुत्ता, लकड़बग्घा, लोमड़ी, भेड़िया, भूषक मृग, तथा रेंगने वाले जीव में सांप के विभिन्न प्रजाति कोबरा, करैत, अजगर, इत्यादि मिलते हैं। यहां मानीटर लिजार्ड (गोहिया) अधिक पाए जाते हैं। पक्षी में मोर, दुधराज, तोते, के तीन किस्में–गोल्डन आरियल, ड्रेगो तथा राधिन; कटफोड़वा, बुलबुल, हुदहुद, बाज, उल्लू, इत्यादि पाए जाते हैं।

सारणी क्र.–4:3

वन्य प्राणी बारनवापारा अभ्यारण्य

वन्य प्राणी	1996	1997	1998	1990	2001	2003	2005
बाघ	13	12	13	13	11	09	08
तेन्दुआ	39	42	48	53	54	52	51
चीतल	4354	4363	4427	4448	5352	3723	4341
सांभर	312	321	320	335	541	198	214
कोटरी	340	342	251	255	590	165	155
नीलगाय	78	82	86	89	301	156	162
गौर	297	305	497	505	564	515	599

स्रोत – मुख्य वन्य प्राणी अभिरक्षक, छत्तीसगढ़

दर्शनीय स्थल :– बारनवापारा अभ्यारण्य के आस–पास अनेक दर्शनीय स्थल हैं।

सिरपुर :–

भारत का प्रमुख पुरातात्विक केन्द्र सिरपुर बारनवापारा से 40 कि.मी. दूर महानदी के तट पर स्थित है। यहां वैष्णव, शैव, तथा बौद्ध संप्रदायों के स्मारकों के अवशेष एक साथ मिलते हैं। सातवीं शताब्दी में निर्मित लक्ष्मण मंदिर, बौद्धविहार, शिव का गंधेश्वर मंदिर यहां प्रमुख दर्शनीय स्थल है। सिरपुर में भगवान शिव के लिंग नदी के तट पर जगह जगह पाए जाते हैं। एक धारणा यह है कि

यहां के राजा जहां पर पूजा करते थे वहां शिवलिंग का उद्‌भव हो जाता था। राजा के द्वारा यहां 99999 लिंग का उद्‌भव हुआ ।

तुरतुरिया :–

आठवीं शताब्दी के पुरातात्विक अवशेष यहां विद्यमान हैं। पहाड़ियों तथा घने वनों से आच्छादित तुरतुरिया में एक बारहमासी झरना पहाड़ियों से नीचे गिरता हैं। जिसे स्थानीय लोग सुर सुरी गंगा के नाम से पुकारते हैं। यहां आठवीं शताब्दी के राममंदिर, वाल्मीकि आश्रम हैं। स्थानीय मान्यता के अनुसार सीता जी ने अपना वनवास यहीं व्यतीत किया था, तथा लव एवं कुश का जन्म यहीं हुआ था। धार्मिक मान्यता के साथ पौष माह में यहां तीन दिवसीय मेला लगता है, जिसमें लाखों श्रद्धालु पहुचंते हैं।

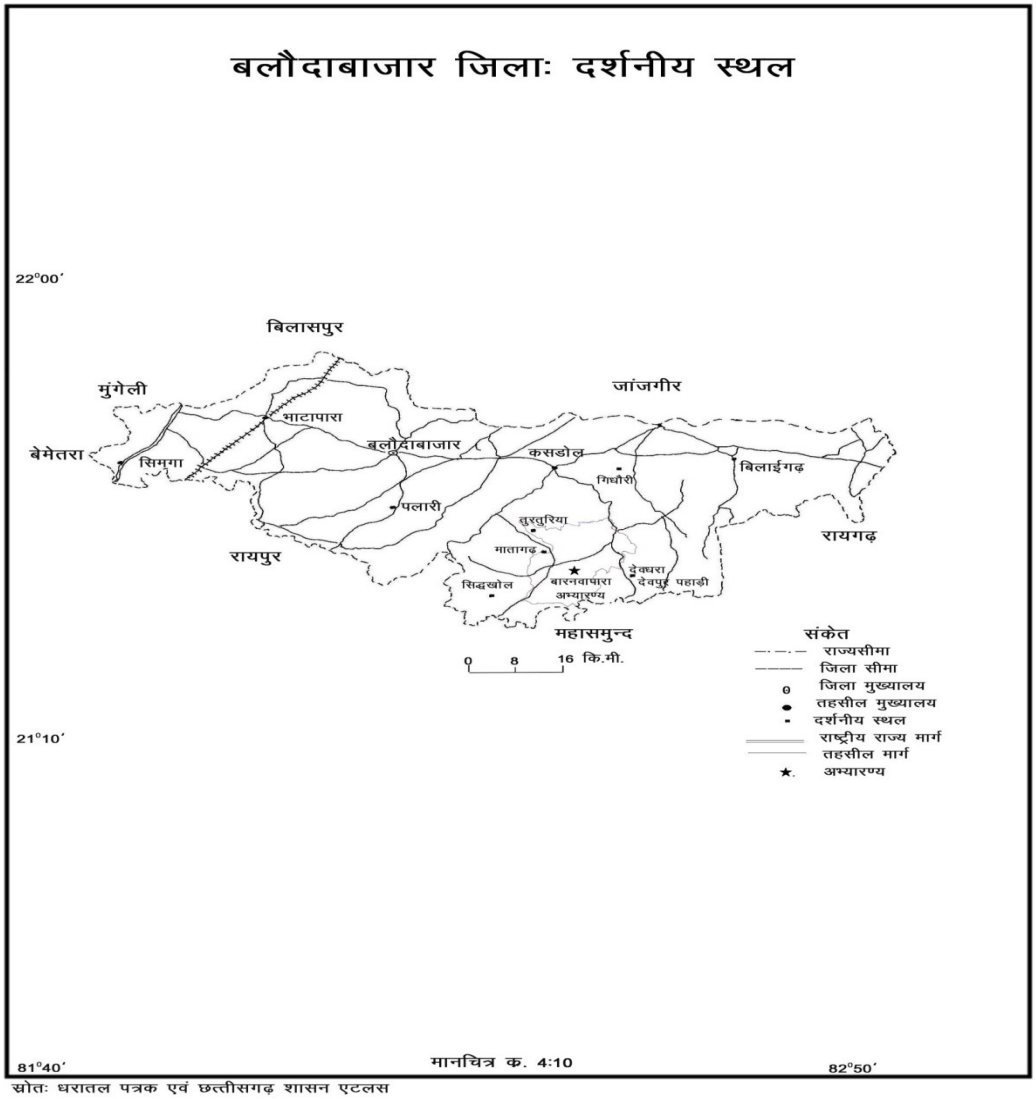

मानचित्र क. 4:10

स्रोतः धरातल पत्रक एवं छत्तीसगढ़ शासन एटलस

मातागढ़ :–

बालमदेही नदी के पश्चिम में देवी मां का प्राचीन मंदिर है, मान्यता है कि निसंतान दम्पति यहां संतान प्राप्ति की मनौती के लिए आते हैं तथा मन्नत पूरी होने पर पौष पूर्णिमा के दिन तुरतुरिया मेले में संतान के साथ आकर उसका मुंडन करवाते हैं।

देवधरा :–

अभ्यारण्य की पूर्व सीमा पर स्थित देवपुर पहाड़ी में बांस एवं मिश्रित वनों से घिरा प्राकृतिक झरना पर्यटकों के आकर्षक का केन्द्र है। पर्यटकों द्वारा यहां पिकनिक का आनंद लिया जाता है।

तेलईधारा :–

बारनवापारा से 10 कि.मी. दूर स्थित साल एवं बांस से घिरा प्राकृतिक जलप्रपात अत्यंत आकर्षक एवं रमणीक पिकनिक स्थल है।

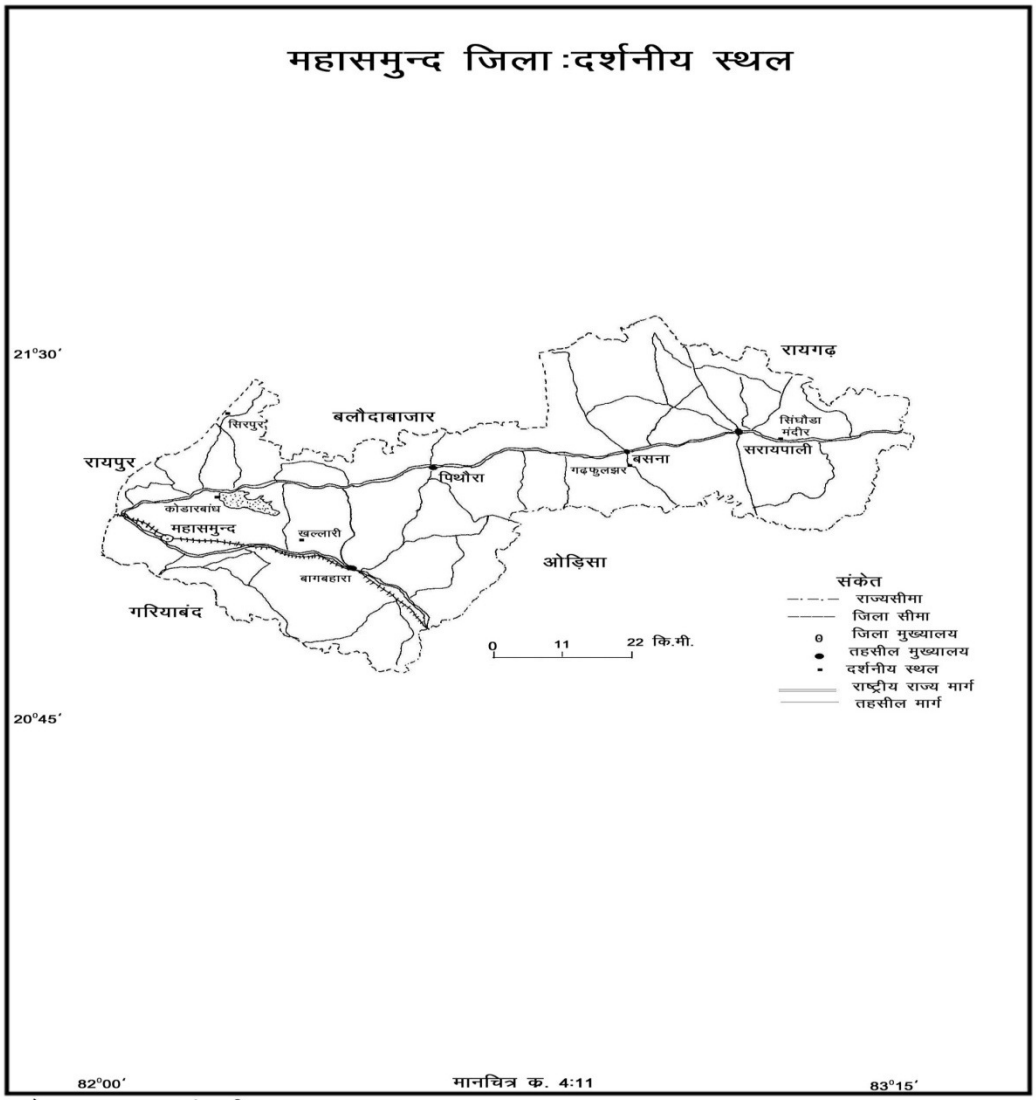

मानचित्र क. 4:11

स्रोतः धरातल पत्रक एवं छत्तीसगढ़ शासन एटलस

देवपुरी पहाड़ी :–

बलौदाबाजार जिले का सर्वाधिक ऊंची पहाड़ी है। बारनवापारा की पूर्व सीमा पर स्थित देवपुर पहाड़ी पर बने पहाड़ी रास्तों का भ्रमण रोमांचक अनुभव है। यहां साल, बांस, तथा रोपित सागौन के वन अधिक रोमांचक बनाते हैं।

सिद्ध खोल :–

बारनवापारा से 20 कि.मी. दूर स्थित सिद्धखोल जलप्रपात के पास एक मंदिर है। जहां लोग दर्शन एवं पूजा करने आते हैं। जलप्रपात की धारा 45 मीटर की ऊंचाई से नीचे गिरती है। यह पर्यटकों के लिए आकर्षक पिकनिक स्थल है।

शिवरीनारायण :–

बारनवापारा अभ्यारण्य से 50 कि.मी. दूर महानदी के तट पर स्थित शिवरीनारायण प्राचीन धार्मिक स्थलों में से एक है। शिवरीनारायण के पास शिवनाथ एवं जोंक नदियां महानदी में मिलकर त्रिवेणी संगम बनाती हैं। यहां भगवान राम तथा शिव के प्राचीन मंदिर हैं। स्थानीय मान्यता के अनुसार राम, लक्ष्मण, सीता, ने अपने वनवास का कुछ समय यहां व्यतीत किया था जब शबरी नामक भीलनी ने भगवान राम को यहां जुठे बेर खिलाए थे। स्थानीय मान्यता के अनुसार लक्ष्मण जी ने शिवलिंग की प्राण प्रतिष्ठा खरौद के शिवमंदिर में किया था जो शिवरीनारायण से 3 कि.मी. दूर स्थित है। मंदिर के पास ही लक्ष्मण कुण्ड है, जिसमें बारह महीने पानी रहता है।

गिरौदपुरी धाम एवं छाता पहाड़ :–

गिरौदपुरी धाम संत घासीदास जी की जन्मस्थली है। यह बारनवापारा से 40 कि.मी. दूर स्थित है। यहां छाता पहाड़ एक बड़ा पत्थर है जिस पर संत गुरू घासीदास बैठकर ज्ञान प्राप्त किया करते थे। प्रतिवर्ष लाखों श्रद्धालु यहां दर्शन के लिए आते हैं।

———————————————